निरालाः एक परिचय

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का प्रारंभिक नाम सूर्य कुमार त्रिपाठी। जन्म–29 फरवरी सन 1899 ई ,स्थान–महिषादल (मेदिनीपुर) ,पश्चिम बंगाल। मूल निवासी–गढ़ाकोला, उन्नाव, उत्तर प्रदेश। पिता–रामसहाय त्रिपाठी। पत्नी–मनोहरा देवी। पुत्र–रामकृष्ण त्रिपाठी। पुत्री–सरोज। उन्होंने महिषादल के राजा के यहाँ नौकरी किया पर जीविकोपार्जन का अन्य उपाय न होने पर भी उस नौकरी को छोड़ दिया। वे रामकृष्ण मिशन से निकलने वाली पत्रिका 'समन्वय' के संपादक 1922 ई में बने। वे सन् 1923–24 में 'मतवाला' पत्रिका के संपादक बने। मृत्यु–15 अक्टूबर 1961 ई, प्रयाग।

काव्य–संकलनः अनामिका (प्रथम संकलन, प्रकाशन काल–कलकत्ता से 1923 ई में), परिमल (1930 ई), गीतिका, अनामिका (द्वितीय संस्करण 1938 ई), तुलसीदास, अणिमा (1943 ई), बेला (1946 ई), नये पत्ते, आराधना, अर्चना, गीतगुँज, सांध्य–काकली और अपरा (1947 ई)।

प्रथम कविता– जूही की कली (रचनाकाल–1916 ई), मतवाला में 1933 ई में छपी।

उपन्यास–प्रभावती, कुल्लीभाट , चोटी की पकड़, देवी (1948 ई), काले कारनामे (1950 ई) ,अप्सरा (1931 ई) ,अलका,, निरूपमा, बिल्लेसुर बकरिहा (1941 ई)

कहानी–संग्रह– लिली (1933 ई) चतुरी चमार (194 5ई),) सुकुल की बीबी

शोक गीत– सरोज स्मृति (1935 ई)

निबंध संग्रह–प्रबंध पद्म (1934 ई),प्रबंध प्रतिमा (1940 ई)

सम्पादक– समन्वय, मतवाला, सुधा

हिन्दी के छायावादी कवियों में निराला का विशेष स्थान है। वे हिन्दी में मुक्त छन्द के जनक हैं। वे 'परिमल' की भूमिका में लिखते हैं,''मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्य की मुक्ति कर्म के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से छुटकारा पाना ''। परिमल के प्रथम खंड में तुकांत कवितायें हैं पर द्वितीय खंड में संकलित कविताओं को उन्होंने 'मुक्त गीत' कहा है। सनृ 1938 में प्रकाशित अनामिका निराला के प्रौढ़ रचनाओं का संकलन है। इसमें प्रेयसी, सरोज–स्मृति, राम की शक्तिपूजा आदि उत्कृष्ट कवितायें संकलित हैं। 'सरोज–स्मृति' हिन्दी का प्रथम शोक गीत ह्वै। इस कविता को कवि ने अपनी पुत्री की मृत्यु के एक वर्ष बाद लिखा था। इस कविता में सरोज के बचपन से लेकर मृत्यु तक की घटनाओं का मार्मिक वर्णन है। कविता में कवि का आर्थिक संघर्ष उजागर हुआ है–

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,

कुछ भी तेरे हित न कर सका!

जाना तो अर्थोगमोपाय,

पर रहा सदा संकुचित–काय।

'सरोज–स्मृति' कविता में निराला ने समाज में व्याप्त रूढ़ियों और अंधविश्वासों पर करारा व्यंग्य और प्रहार किया है–

ये कान्यकुब्ज कुल कुलांगार

खाकर पत्तल में करे छेद,

इनके कर कन्या अर्थ खेद

इस विषय बेलि में विष ही फल,

यह दग्ध मरुस्थल—नहीं सुजल।

'राम की शक्ति पूजा' (1936ई) एक लम्बी कविता है। राम की शक्ति पूजा' के राम अलौकिक राम नहीं हैं इसलिए उनका मन संशयग्रस्त रहता है। राम , रावण को पराजित करने के लिए शक्ति की उपासना करते हैं। निराला ने मिथक कथा को आधार बना कर स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भारतीयों को प्रेरित किया है। कवि ने संकेत किया है कि विदेशी शक्ति को पराजित करने के लिए भारतीयों को अपने अंदर एकाग्रता लाना होगा, शक्ति का संचय करना होगा और संगठित होना होगा। कविता में निराला का व्यैक्तिक जीवन—संघर्ष भी प्रगट हुआ है । उन्हें आजीवन विरोधियों का सामना करना पड़ा। वे कहते हैं—

धिक् जीवन जो पाता ही आया है विरोध

धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।

'तुलसीदास' में कवि निराला ने तुलसीदास के जीवन और तत्कालीन समाज का चित्रण किया है। कवि ने तुलसी के माध्यम से ह्रासोन्मुखी भारतीय संस्कृति और उसके लिए जिम्मेवार लोगों पर व्यंग्य किया है। कवि भारतीयों को सचेत करने का प्रयास करता है और भारत के गौरवशाली मूल्यों की प्रतिष्ठा करता है। डॉ राम विलास शर्मा ने इस रचना को 'एपिक क्वालिटी' से ओतप्रोत बताया है।

'कुकुरमुत्ता' एक लम्बी, व्यंग्यात्मक कविता है। इसमें कुकुरमुत्ता सर्वहारा का और गुलाब पूँजिपतियों का प्रतीक है।

कवि निराला की व्यंग्यात्मक कवितायें अनामिका, बेला, नये पत्ते और कुकुरमुत्ता में संकलित हैं।

अर्चना, गीतगुंज और गीतिका में कवि के गीत संकलित हैं। इनके गीत राग—रागिनियों से बंधे नहीं हैं। ये नये स्वर—ताल से युक्त हैं।

निराला की कविताओं में विद्रोह और क्रांति का स्वर है। वे क्रांति की सार्थकता किसानों की मुक्ति में देखते हैं। वे 'बादल राग' कविता में किसानों की मुक्ति के लिए वीर बादलों का आह्वान करते हैं। तत्कालीन समाज के यथार्थ चेहरे को निराला के काव्य में देखा जा सकता है। उनकी कविताओं में आर्थिक विषमता, अन्याय, अत्याचार और विभेद के प्रति विद्रोह का स्वर सुनाई पड़ता है। उसमें व्यथा और वेदना है। पीड़ित मानवता के प्रति सहानुभूति है।